सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या– **328**
18/04/2017

सत्य और अहिंसा के सिद्धांत को आज आचरण में उतारना आवश्यक है–राज्यपाल

पटना, 18 अप्रैल 2017 ::– ''गाँधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत की पहली वास्तविक प्रयोगशाला बनने का सौभाग्य बिहार की चम्पारण की धरती को प्राप्त है। सत्य और अहिंसा के प्रयोग को आज आचरण में उतारने की आवश्यकता है। जातीयता, धार्मिक रूढ़ियाँ, बाह्याडम्बर, क्षेत्रवाद, संकीर्णता आदि से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानना ही चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी आयोजन की सही सार्थकता होगी।'' –उक्त विचार, महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द ने बिहार विद्यापीठ सभागार में चम्पारण सत्याग्रह–शताब्दी वर्ष के सिलसिले में आयोजित समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री कोविन्द ने कहा कि आचरण और सिद्धांत में एकरूपता अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गाँधीजी के विचारों से नयी पीढ़ी को अवगत कराते हुए उसे राष्ट्र–निर्माण के प्रति अभिप्रेरित करना बहुत जरूरी है।

राज्यपाल ने गाँधीजी के ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का उल्लेख करते हुए कहा कि सबको अपने उपयोग भर की सम्पत्ति के प्रति ही चिंतित होना चाहिए। समाज–कल्याण मानव–जीवन का व्यापक उद्देश्य होना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि सत्याग्रह का उपयोग व्यापक जनहित में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि संपूर्ण बिहार और विशेषकर चंपारण की धरती का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अविस्मरणीय योगदान है। राज्यपाल ने बिहार विद्यापीठ के विकास के लिए किये गये अनुरोध के आलोक में आवश्यक पहल हेतु मुख्यमंत्री से चर्चा करने की बात कही।

इस अवसर पर राज्यपाल ने श्री भैरवलाल दास की पुस्तक –''चम्पारण में गाँधी की सृजन यात्रा'' को लोकार्पित भी किया। राज्यपाल ने इस श्रमसाध्य और प्रेरणादायी सारस्वत प्रयास के लिए लेखक को बधाई दी। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री आर॰यू॰ सिंह को भी गाँधीजी पर काव्य–पुस्तक लिखने पर बधाई दी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ॰ रत्नेश्वर मिश्र ने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह गाँधीजी का सत्य और अहिंसा पर आधारित पूर्णतः सृजनात्मक प्रयोग था। प्रो॰ भारती एस॰ कुमार ने कहा कि बिहार की धरती प्रतिरोध की धरती रही है। उन्होंने कहा कि किसानों की समस्याओं के प्रति आज भी पूरी संवेदनशीलता आवश्यक है। कार्यक्रम में स्वागत–भाषण करते हुए बिहार विद्यापीठ के अध्यक्ष श्री विजय प्रकाश ने बिहार विद्यापीठ की गतिविधियों तथा स्वतंत्रता–आंदोलन में इसके महत्व को रेखांकित किया। धन्यवाद–ज्ञापन करते हुए डॉ॰ तारा सिन्हा ने कहा कि 'चम्पारण सत्याग्रह' के पूर्व से ही वहाँ किसान अपनी समस्याओं को लेकर संघर्षरत थे तथा स्थानीय बिहारी नेताओं के सहयोग से गाँधीजी को 'चम्पारण सत्याग्रह' को कामयाब बनाने में भरपूर मदद मिली।

.....